प्रकाशन तिथि : 04 फरवरी, 2020
प्रेषण तिथि : 01 फरवरी 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 22 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

कृतज्ञ समाज ने मनाई संघ के प्रणेता की जयंती

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 96वीं जयन्ती 25 जनवरी, 2020 को देशभर में उत्साह पूर्वक मनाई गई जिसमें स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने अपने प्रेरणास्त्रोत को पुष्पांजलि अर्पित कर उनके प्रति श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की। जयपुर स्थित संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में मुख्य समारोह माननीय संघप्रमुख श्री के सानिध्य में सम्पन्न हुआ जिसमें शहर में रहने वाले समाजबंधु मातृशक्ति सहित बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

चित्तौड़गढ़ में भूपाल राजपूत छात्रावास के परिसर में संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा की उपस्थिति में जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि दीपक की सार्थकता केवल अंधियारा मिटाने में ही नहीं अपितु बुझने से पूर्व अपने जैसे अनेकों दीपों को प्रज्वलित कर देने में हैं। पूज्य तनसिंह जी द्वारा स्थापित श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे ही दीपक तैयार करने का कार्य कर रहा है। इन दीपों की श्रृंखला में हम भी एक कड़ी बनकर जुड़ जायें तो हमारा जीवन सार्थक हो जायेगा। कार्यक्रम को भूपाल पब्लिक स्कूल के एम डी लालसिंह भाटी, वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह साजियाली, बाबूसिंह जगपुरा, मीना कुंवर सहाड़ा ने भी संबोधित किया। जोधपुर संभाग के संघ कार्यालय 'तनायन' में महिला शाखा व तनायन शाखा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कहा कि पूज्य तन सिंह जी ने संपूर्ण जीवन को जीवन लक्ष्य की ओर ले जाने वाली कार्यप्रणाली प्रदान की एवं स्वयं के जीवन द्वारा उसे पुष्ट किया इसलिए उनका बहुआयामी जीवन जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति के शिखर तक पहुंचने की कहानी है। महिला शाखा की रश्मि रामदेरिया ने पूज्य श्री का परिचय प्रस्तुत किया। श्री हनुवंत राजपूत छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम में संभाग प्रमुख चंद्रवीरसिंह देणोक उपस्थित रहे। छात्रावास के वार्डन गजेसिंह गंठिया तथा डॉ. मनोहरसिंह बुड़ीवाड़ा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। शाखाप्रमुख मोहनसिंह गंगासरा द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। जोधपुर में जय भवानी नगर में वरिष्ठ स्वयंसेवक चैनसिंह बैठवास की उपस्थिति में जयंती मनाई गई जिसमें जय भवानी नगर, पाल, बी जे एस तथा रातानाडा में रहने वाले समाजबंधु सम्मिलित हुए। जोधपुर संभाग के भोपालगढ बिलाडा प्रान्त में साथिन में पूज्य श्री की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें साथिन व पड़ोसी गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

चल पड़े हैं तो रुके नहीं : संघ प्रमुख श्री

पूज्य तनसिंह जी की जयंती मनाने की सार्थकता इसी में है कि चले हैं तो रुके नहीं। जहां श्रेष्ठता दिखाई दी उसके पीछे चल पड़े तो जीवन को प्रयोगों में नहीं खपाए बल्कि जीवन लक्ष्य की ओर ले जाने वाले मार्ग पर निरन्तर चलते रहें, चाहें अनेकों जन्मों तक चलना पड़े। यही पूज्य तनसिंह जी का संदेश है, यही श्री क्षत्रिय युवक संघ का संदेश है और यही आज के कार्यक्रम का संदेश है। चलने से पहले यह अवश्य समझ लेवें कि हरेक दौड़ में शामिल नहीं होना है, जो दौड़ लक्ष्य की ओर ले जाए उसी में शामिल होना है। ऐसा जागृत हुए बिना नहीं हो सकता। संघ जागृति का ही मार्ग है। जो कुछ हम कर रहे हैं वह ज्ञान है या अज्ञान है, इसको जानने का मार्ग है संघ। संघ इस जागृति के लिए आह्वान करता है लेकिन बेबस लोग सुन नहीं पाते क्यों कि जो कुछ कर रहे हैं वह अचेतावस्था में कर रहे है। सब एक-दूसरे के दोषों को देख रहे हैं इसलिए परिवर्तन नहीं हो पाता। जब अपने आपको देखना प्रारम्भ करेंगे तब जागरण प्रारंभ होगा।

जयपुर में केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में आयोजित पूज्य तनसिंह जी जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि संघ इस बात का दावा तो नहीं करता कि सब देवता बन गए हैं क्योंकि देवता और दानव व्यक्ति के अन्दर बसते है लेकिन सैंकड़ों लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने देवत्व को जगाने के मार्ग पर कदम बढ़ाया है और वे अपने मार्ग पर चलने में मस्त हैं। अब तक लाखों लोग संघ की शाखाओं और शिविरों में आए है लेकिन अंत तक चलने वाले बहुत कम होते हैं। लेकिन संघ रुकने वालों के साथ रुकता नहीं है। पूज्य तनसिंह जी ने अनेक साथी बनाए लेकिन रुकने वाले साथियों के साथ रुके नहीं बल्कि चलते रहे और नए साथी बनाते रहे। 1979 में तनसिंह जी का पार्थिव शरीर छूट गया लेकिन संघ रुका नहीं। उनसे पहले 5-6 वर्षों के लिए आयुवानसिंह जी ने संघ का नेतृत्व किया, वे भी नहीं रहे लेकिन संघ रुका नहीं। पूज्य तनसिंह जी के बाद उनके शिष्य नारायणसिंह जी ने संघ का संचालन किया, वे भी 1989 में पार्थिव शरीर को छोड़ गए लेकिन संघ नहीं रुका और मेरा विश्वास है कि आगे भी संघ इसी प्रकार चलता रहेगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मुंबई प्रवास व स्वामी जी का सानिध्य

संघ प्रमुख श्री समय-समय पर पूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज का सानिध्य लाभ लेने हेतु उनके प्रवास स्थानों पर पधारते रहते हैं। इसी कड़ी में विगत 20 जनवरी से 24 जनवरी तक संघ प्रमुख श्री मुंबई रहे एवं वहां प्रवास कर रहे स्वामी जी का सानिध्य लाभ लिया। विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा की। स्वामीजी ने विदाई के समय संघ प्रमुख श्री को साफा पहना कर विदा किया।

71वां गणतंत्र दिवस मनाया

देश के 71वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में प्रातःकालीन शाखा के उपरान्त फहराया गया एवं राष्ट्र गान गाकर इस राष्ट्रीय पर्व को मनाया गया। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में भी गणतंत्र दिवस मनाया गया। माननीय संघ प्रमुख श्री जयपुर के भवानी निकेतन शिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

एक आदर्श संगठन के चार सूत्र होते हैं- एक ध्येय, एक मार्ग, एक ध्वज एवं एक नेता। ये एक से अनेक होते ही संगठन विखंडित हो जाता है। नेता और कार्यकर्ता के आदर्श संबंध का पूज्य तनसिंह जी ने अनेक जगह उल्लेख किया है। उनके साहित्य में स्थान-स्थान पर इसे देखा जा सकता है। उन्होंने जिस प्रकार लिखा ठीक उसी प्रकार का व्यवहार अवसर मिलने पर किया भी। उनके अनुसार एक कार्यकर्ता अपने नेता की छाया होता है इसलिए उन्होंने लिखा कि 'मेरे ही प्रेरक की मैं छाया बनूं।' उनके अनुसार सिपाही के लिए सेनापति का आदेश ही सर्वोपरि होता है। इससे भी आगे उन्होंने तो यह तक उल्लेख किया है कि नेता की इच्छा ही कार्यकर्ता के लिए आदेश होता है। उनके जीवन में जब भी उन्हें अवसर मिला उन्होंने अपनी इस बात को चरितार्थ कर दिखाया। नागपुर अध्ययन के दौरान वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए। उसी दौरान 30 जनवरी 1948 में गांधीजी की हत्या के उपरान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसके विरुद्ध सत्याग्रह का आह्वान किया। पूज्य तनसिंह जी उन दिनों नागपुर से बाड़मेर आए हुए थे। उन्होंने बिना किसी निमंत्रण के बाड़मेर में सत्याग्रह के प्रथम जत्थे में स्वयं को शामिल किया और 27 दिसम्बर 1948 को गिरफ्तार होकर पूरे तीन माह जेल में रहे। उनका मानना था कि जब बिगुल बज जाता है तो सिपाही को लाइन में खड़ा हो ही जाना चाहिए। भू-स्वामी आंदोलन की घोषणा के समय माट्साब आयुवानसिंह जी संघ प्रमुख थे और इस आंदोलन की योजना एवं घोषणा के समय पूज्य तनसिंह जी अपने ससुराल (पाकिस्तान) पधारे हुए थे। उनको सूचना मिलते ही बाड़मेर पहुंचे एवं बाड़मेर में आंदोलन की शुरुआत कर पूरा दायित्व संभाला। पूरे आंदोलन में माट्साब के साथ नेतृत्व की अगली पंक्ति में उनके निकटतम सहयोगी बने रहे एवं जेल भी गए। माट्साब के संघ प्रमुख रहने के दौरान अनेक ऐसी घटनाएं है जिनमें उन्होंने अपनी इच्छा की परवाह किए बिना केवल संघ प्रमुख की चाह है इसलिए उस चाह को पूरा करने के लिए अपना शत-प्रतिशत देकर अपने नेता का अनुगामी बनने का आदर्श प्रस्तुत किया। उनके उसी आचरण का अनुगमन करने से संघ आज भी 'अपने नेता की आज्ञा पर मरना ध्येय हमारा हो' के आदर्श को व्यवहार में लाने को साधनारत है।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे....

- अभयसिंह रोडला

MAT (मेट)

इस परीक्षा का पूरा नाम 'मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टेस्ट' है। यह परीक्षा देश के 600 से अधिक बिजनेस स्कूल (प्रबंधन विद्यालय) में MBA (मास्टर्स इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) कोर्स में प्रवेश हेतु आयोजित की जाती है। यह परीक्षा वर्ष में चार बार आयोजित होती है - फरवरी, मई, सितंबर तथा दिसंबर में। इसका आयोजन AIMA (ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन) द्वारा किया जाता है। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2003 में MAT को राष्ट्र स्तरीय परीक्षा (National Level Test) की मान्यता प्रदान की गई है।

योग्यता:- MAT परीक्षा में बैठने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता स्नातक उत्तीर्ण होना है। इस परीक्षा हेतु आयु सीमा का कोई बंधन नहीं है। साथ ही एक अभ्यर्थी कितनी भी बार यह परीक्षा दे सकता है। स्नातक अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रहे अभ्यर्थी भी MAT परीक्षा में भाग ले सकते हैं।

यह परीक्षा कंप्यूटर आधारित (ऑनलाइन) तथा ऑफलाइन दोनों माध्यम से आयोजित होती है। अभ्यर्थी के पास ऑनलाइन, ऑफलाइन अथवा दोनों माध्यम से परीक्षा देने का विकल्प होता है। ऑफलाइन अथवा ऑनलाइन परीक्षा हेतु 1550 रुपये तथा दोनों माध्यम से परीक्षा देने का शुल्क 2650 रुपये है।

MAT परीक्षा की अवधि 150 मिनट (ढाई घण्टे) की होती है। इसमें 200 बहुवैकल्पिक प्रश्न पूछे जाते हैं। भाषाई योग्यता, गणितीय कौशल, डेटा विश्लेषण, बौद्धिक व आलोचनात्मक तर्कशक्ति तथा भारतीय व वैश्विक पर्यावरण - इन पांच विषयों में से प्रत्येक से 40-40 प्रश्न पूछे जाते हैं। अभ्यर्थी को प्रत्येक सही उत्तर के लिए एक अंक मिलता है जबकि प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 0.25 नकारात्मक अंक प्रदान किए जाते हैं। MAT परीक्षा का स्कोर एक वर्ष तक मान्य रहता है। इस परीक्षा की विस्तृत जानकारी www.aima.in पर प्राप्त की जा सकती है।

क्रमशः

बाड़मेर प्रवास के दौरान स्नेहमिलन

संघ प्रमुख श्री के बाड़मेर प्रवास के दौरान विभिन्न लोगों ने संघ प्रमुख श्री से मुलाकात की। इसी क्रम में 14 जनवरी को दिन में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक देवीसिंह माडपुरा व सामाजिक कार्यकर्ता ईश्वरसिंह ढीमा (गुजरात) ने मुलाकात की। इसी दौरान जिला कलक्टर बाड़मेर के रीडर अम्बाराम ने संघ प्रमुख महोदय से मुलाकात कर अनुसूचित जाति व राजपूत समाज के प्रगाढ़ संबंधों व अतीत के अपनत्व के बारे में चर्चा की तथा दोनों समाजों के मध्य सद्भावना पर जोर दिया। इस अवसर पर संघ प्रमुख श्री ने उन्हें यर्थाथ गीता भेंट की। सायंकाल अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के नेता व शिक्षक भोजराम बौद्ध ने भी संघ प्रमुख श्री से मुलाकात कर दोनों समाजों के मध्य अकारण फैली भ्रांतियों व दूरियों को पाटने के लिए सार्थक प्रयासों पर बल देने की बात की व विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों से संवाद स्थापित करने की संघ की पहल की सराहना करते हुए सबके लिए न केवल अनुकरणीय वरन मील का पत्थर साबित होने की बात कही।

भगवान बुद्ध के जीवन, बौद्ध धर्म आदि पर भी संघ प्रमुख श्री से सार्थक चर्चा की। इस दौरान भगवान बुद्ध के सिद्धान्त पर आधारित एक पुस्तक 'बुद्ध और उनका धम्म' नामक पुस्तक संघ प्रमुख श्री को भेंट की। सायंकाल में संघ प्रमुख श्री सान्निध्य में बाड़मेर संभाग के स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन आयोजित किया गया।

स्नेहमिलन में आए स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य बढ़ने लगा है। बढ़ते कार्य में संघ के स्वयंसेवकों की गति आवश्यक है। आपकी गति मंद होने या रुकने पर संघ के कार्यों की गति भी रुक जाती है। आपको ऊर्जा का बूस्टर देने, इंजेक्ट करने के लिए इस प्रकार के स्नेहमिलनों का आयोजन किया जाता है। हम यदि किसी कारणवश कुछ समयावधि तक किसी भी कारण संघ से दूर रह जाते हैं तो फिर यह समझने लगते हैं कि अब जाएंगे तो पता नहीं क्या होगा, लोग क्या कहेंगे। अब मैं बहुत पीछे रह गया हूं। ऐसी सोच मिथ्या भ्रम है, संघ अपना घर है, घर के दरवाजे घरवालों के लिए कभी बंद नहीं हो सकते निःसंकोच आवें। हम में से किसी ने भी संघ को नहीं जाना है, यहां तक कि जानने का प्रयास भी नहीं कर रहे हैं, जिस दिन जानने का प्रयास करेंगे तो कद स्वतः बढ़ने प्रारम्भ हो जाएंगे। अभी तो महज उसी स्थान पर कदम ताल कर रहे हैं। पूज्य नारायणसिंह जी ने अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य रखा। पूज्य तनसिंह जी के लिए जीना, बहुत छोटा लक्ष्य हो सकता है पर उन्होंने ना परमेश्वर के लिए और ना ही समाज के लिए जीने का लक्ष्य रखा परन्तु वास्तव में तनसिंह जी के लिए जीने में उनके ये दोनों लक्ष्य स्वतः पूर्ण हुए। हम सिर्फ उनके इस लक्ष्य निर्धारण मात्र को समझ लें, जीवन में धारण करने का प्रयास भर कर लें तो भी कदम स्वतः बढ़ने लगेंगे। गीता के प्रथम अध्याय में अर्जुन कई भ्रांतियों से ग्रसित रहता है परन्तु द्वितीय अध्याय व उसके आगे उसकी समस्त भ्रांतियां दूर होती हैं और अपना लक्ष्य श्रीकृष्ण के आदेश को मानकर जीने लगता है तो वह सब कुछ पा लेता है। हम हमारे जीवन लक्ष्य को चाहे श्रीकृष्ण स्वरूप, चाहे तनसिंह जी स्वरूप, चाहे संघ रूप में स्थापित कर लें तो कदम दर कदम बढ़ते जाएंगे, यही जीवन का वास्तविक लक्ष्य है।

अतः ऐसे स्नेहमिलनों, शाखाओं, शिविरों या संघ के विभिन्न कार्यक्रमों को आने और अपने जीवन लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाना प्रारंभ करें तो संघ कार्य भी होगा ओर ईश्वर ने जिस निमित हमें इस संसार में भेजा है वह भी पूर्ण होगा। बिना किसी भय, शंका, पूर्वाग्रह को आवें, अश्वय आएं, संघ को हमेशा आपकी प्रतीक्षा रहती है।

71वां गणतंत्र...

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ प्रमुख श्री ने इस अवसर पर विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं संस्था के प्रबंधकों से कहा कि विद्या वह होती है जो विनय प्रदान करे एवं शिक्षा वह होती है जो अंदर के सत्व को जागृत कर दे। हमारे लिए विचारणीय यह है कि अंधानुकरण की दौड़ में शामिल होकर क्या हम विद्या एवं शिक्षा के इस मूल को बचा पा रहे है या इनके नाम पर कुछ अलग ही पा रहे है। हमे बैठकर इस पर विचार करना चाहिए।

संघ प्रमुख श्री का जैसलमेर प्रवास

सप्ताह भर के बाड़मेर प्रवास के बाद माननीय संघ प्रमुख श्री 15 जनवरी को जैसलमेर पधारे। 15 जनवरी को मकर संक्रांति के अवसर पर सभी स्वयंसेवकों के साथ मिलकर सूर्य भगवान के इस उत्तरायण पर्व को मनाया एवं सभी ने साथ में भोजन किया। संघ प्रमुख श्री ने जैसलमेर के संभागीय कार्यालय तनाश्रम की व्यवस्था की जानकारी ली एवं कार्यालय की नियमावली को लेकर चर्चा की। 16 जनवरी को प्रातःकालीन शाखा में पूज्य मात्साब आयुवानसिंह जी की पुस्तक 'मेरी साधना' के अवतरणों पर चर्चा में शामिल हुए एवं उन अवतरणों का मंतव्य समझाया। दिन में सभी स्वयंसेवकों से जैसलमेर में संघ कार्य पर चर्चा की एवं व्यक्तिगत समाचार पूछे। पंचायत चुनावों को लेकर भी चर्चा हुई एवं क्षेत्र के राजनीतिक समाचार जाने। 16 जनवरी को दोपहर का भोजन साथी स्वयंसेवकों के साथ सुरेन्द्रसिंह पोछीना व शाम का भोजन जैसलमेर संभाग के संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा के यहां ग्रहण किया। 17 जनवरी को कार्यालय की प्रातःकालीन शाखा में शामिल होने के बाद बाड़मेर पधारे एवं वहां बालिका छात्रावास के भूमि पूजन समारोह में शामिल हुए। शाम पांच बजे जैसलमेर पधारे एवं सभी स्वयंसेवकों के साथ वरिष्ठ स्वयंसेवक हरिसिंह बैरसियाला के नवीन प्रतिष्ठान होटल देव विला का निरीक्षण किया एवं वहीं सबके साथ भोजन किया। 18 को सुबह कार्यालय की शाखा में शामिल होने के पश्चात पोकरण संभाग के संभाग प्रमुख गणपतसिंह अवाय के पुत्र नटवरसिंह के विवाह के अवसर पर आयोजित भोज में शामिल होने अवाय पधारे। वहां उपस्थित क्षेत्र के प्रतिष्ठित समाज बंधुओं से भेंट की एवं समाज विषयक चर्चा की। भोजनोपरांत जैसलमेर लौटते समय मोहनगढ़ पधारे एवं विगत दिनों शहीद हुए स्वयंसेवक राजेन्द्रसिंह के परिवारजनों से मिले। परिवारजनों के साथ राजेन्द्रसिंह के सांघिक जीवन के अनुभवों को साझा किया एवं परिवार की कुशलक्षेम पूछी। वहां से जैसलमेर के गड़ीसर सरोवर पहुंचे और सरोवर का निरीक्षण किया। जैसलमेर के राजगुरुद्वारा आसरी मठ पहुंच कर वहां के मठाधीश शिवमुख नाथ जी के स्वास्थ्य की कुशल क्षेम पूछी एवं आध्यात्मिक चर्चाएं की। रात्रि भोजन सभी साथी स्वयंसेवकों के साथ वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला के घर किया। 19 को प्रातःकालीन शाखा में सभी स्वयंसेवकों को संघ के स्वयंसेवक के रूप में उनके उत्तरदायित्व का स्मरण करवाया एवं निर्देश दिया कि ऐसा कोई काम न करें जिससे संघ व समाज को लज्जित होना पड़े। दोपहर भोजन के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थानीय पदाधिकारियों त्रिलोक जी खत्री, अमृत जी दैया, डॉ. दाऊलाल जी सोनी के साथ विभिन्न विषयों पर मंत्रणा की। इसके उपरान्त स्नेहमिलन आयोजित हुआ जिसमें शहर में रहने वाले समाज बंधु व अन्य समाजों के प्रतिष्ठित लोग भी शामिल हुए। स्नेहमिलन के दौरान श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के कार्य को लेकर भी चर्चा की गई एवं संघ प्रमुख श्री से आवश्यक दिशा-निर्देश मिले। स्नेहमिलन के उपरान्त जैसलमेर नगरपालिका के नव चयनित चेयरमैन हरिवल्लभ कल्ला, पूर्व विधायक डॉ. जितेन्द्रसिंह, पूर्व विधायक छोटूसिंह भाटी, मुरलीधर खत्री आदि से अनौपचारिक चर्चा की एवं सभी को यथार्थ गीता भेंट कर सम्मानित किया। स्नेहमिलन में महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि के उपलक्ष में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

'उन्नत भविष्य निर्माण हेतु वर्तमान को श्रेष्ठतम बनाएं'

19 जनवरी को 'तनाश्रम' जैसलमेर में आयोजित स्नेहमिलन में संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन का संपदित अंश।

हमने प्रारम्भ में एक गीत गाया 'ऐसा संघ हमारा हो' जब-जब देश, समाज और धर्म पर संकट आया हमने मुकाबला किया, उत्सर्ग किया। हमने परिजनों की परवाह किए बिना बलिदान दिए। देश पर बड़े संकट के समय कोई भी एक होने की प्रेरणा राजपूत समाज से ले सकता है। हमारा आचरण ही ओरों का मार्गदर्शन है, प्रवचन नहीं। जहां हम खड़े हो जाएं लोगों को दिखाई देने लगे कि यह वो कौम है जो सबको साथ लेकर चलती रही है। एक हजार वर्षों तक देश की आततइयों से रक्षा की। सभी ने सहयोग किया परन्तु अगुआ हम रहे। खून गिरे तो हमारा गिरे, लाभ मिले तो सर्व समाज को मिले। ऐसे भाव से श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना हुई। सतयुग में समरसता थी सभी सुखी थे। वर्तमान युग में हम एक हजार वर्ष तक संघर्ष के बाद लगता है थक गए। राजपूत का जीवन विश्राम के लिए नहीं होता है। हमें सदैव जागृत रहकर सभी को जगाना है। हमने इतिहास बनाया पर लिखा नहीं। जो लिखा गया उस पर गर्व करें। परन्तु केवल गर्व करें व बनाए नहीं तो वह विलुप्त हो जाता है। अंग्रेजों की गुलामी से हम मानसिक गुलाम हो गए। हमने उनका अनुकरण भी शुरू कर दिया। हमारे राजा अपनी प्रजा को गले लगाते थे, परन्तु ब्रिटिश लोगों ने वेटिंग रूम बनाए। हमको राज दरबार में जाने से रोक-टोक नहीं थी परन्तु गुलाम राजा जो अंग्रेजों की कृपा पर थे उन्होंने अंग्रेजों की तरह अपने भाइयों को छोटा मानना शुरू किया, उनसे दूरियां बना ली। हमारी समरसता चली गई। विश्वगुरु होने के बावजूद हमारा देश आज भटकाव में है। हमें पुनः योग्यताएं अर्जित करनी होंगी। सामान्य मजदूर से राष्ट्रपति तक की क्षमताएं विकसित करनी होगी। मानवता की रक्षार्थ आगे कदम हमारा हो ऐसा संकल्प करना होगा। हमें बलवान बनना है। शरीर का असर मन पर पड़ता है। बालकों पर नजर रखें। उन्हें समय दें, संस्कार दें। व्यक्ति निर्माण के बिना समाज व राष्ट्र का निर्माण नहीं होगा। भगवान ने हमे इस पावन देवभूमि पर जन्म दिया है। हम किधर जा रहे हैं, विचार करो। हम गाते है क्षत्रिय कुल में प्रभु जन्म दिया तो। यह ईश्वर की कृपा से अवसर मिला है। हम राजपूत है यदि राजपूती नहीं आई तो इस जन्म का कोई अर्थ नहीं रह जाता। हम अंधानुकरण न करें। अपनी संस्कृति व इंसानियत का ध्यान रखें। आज महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि है। वे हमारे प्रेरक हैं। उन्होंने मातृभूमि को आजाद करवाया। हम भी अपना कर्तव्य कर्म करें। श्री कृष्ण गीता में कहते हैं कि श्रेष्ठ लोगों का संसार अनुकरण करता है। हमें श्रेष्ठ मार्ग का अनुकरण करना चाहिए। उनका जीवन ही हमारे लिए संदेश है। भगवान राम का जीवन ही उनका हमारे लिए संदेश है। संस्कार निर्माण की प्रक्रिया जन्म से पूर्व आरंभ होती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ कहता है हम नेक बनें, अपने मनोबल को ऊंचा रखें, चुनौतियों का सामना हमें ही करना है। हम स्वयं के चरित्र को आचरण द्वारा श्रेष्ठतम बनाएं। हमारा इतिहास गौरवमय है, परन्तु उन्नत भविष्य निर्माण हेतु हमे अपने वर्तमान को श्रेष्ठतम बनाना होगा। दलित वर्ग का सम्मान करें। उन्हें गले लगाएं। सद्भावना रखें। परिजनों का अपमान करके देव पूजन करने वाले पाखण्डी होते हैं। जीवित देवताओं की सेवा करें। साधन कभी लक्ष्य नहीं होते हैं। राज रहे न रहे परन्तु रजपूती रहनी चाहिए, इंसानियत रहनी चाहिए, राष्ट्र रहना चाहिए। पैसे न होने से हम दरिद्र नहीं होते हैं। दरिद्र मन से होते हैं। अपने हौंसले को बुलंद रखें। संतोष रखें। कर्मशील बनें, बलवान बनें, शीलवान बनें, संचय से दुःख होता है। त्याग से संतोष। एक बनें, नेक बनें। राममय बनें।

डीडवाना में पारिवारिक मिलन

डीडवाना शहर में रहने वाले राजपूत परिवारों का दो दिवसीय मिलन कार्यक्रम 29 व 30 दिसम्बर को स्थानीय राजपूत सभा भवन में आयोजित किया गया। इस मिलन समारोह में डीडवाना में व्यवसायरत व्यवसायी एवं शैक्षणिक संस्थानों का संचालन कर रहे समाजबंधु भी शामिल हुए। डीडवाना में निवासरत 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गों को इस कार्यक्रम में स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। बालकों, महिलाओं व पुरुषों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। समारोह में उपस्थित बुजुर्गों द्वारा डीडवाना में रह रहे परिवारों की जानकारी को संग्रहित कर तैयार की गई निर्देशिका का विमोचन किया गया। डीडवाना में संचालित सवाई शिक्षण संस्थान द्वारा अपनी संस्था में राजपूत बालकों को 50 प्रतिशत कम फीस में पढ़ाने की पेशकश भी कार्यक्रम में की गई। नरपतसिंह रणसीसर द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया एवं जीवराजसिंह देवराठी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

संपादकीय

'कट्टरता, जड़ता और एकनिष्ठता'

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'साधक की समस्याएं' के द्वितीय प्रकरण रुढ़िगत साधना में लिखा है कि 'कर्म की आत्मा हर युग में एक ही रहती है, पर उसका कलेवर बदलता रहता है। वह यदि नहीं बदलेगा तो कोई भी कर्म जीवित रहने की क्षमता खोकर एक रुढ़ि का रूप धारण कर लेता है।' उन्होंने इसी प्रकरण में लिखा कि 'किसी एक उत्तमता के वशवर्ती होना ही पाखण्ड का कारण बन जाती है और ऐसी हर उत्तमता त्याज्य है।' कुछ ऐसी ही बात माननीय संघ प्रमुख श्री ने 15 दिसम्बर को 'संघशक्ति' में आयोजित कायमखानी समाज की बैठक में कही। उन्होंने कहा कि कट्टरता जड़ता लाती है। अर्थात कट्टर व्यक्ति की प्रगति बाधित होकर स्थिर हो जाती है। उसमें चेतनता का प्रवाह रुक जाता है और स्थिर होने से जड़ता आती है। जड़ता का अर्थ निर्जीव होना है, गति का अवरुद्ध हो जाना है। जिनको हम आज रुढ़ि कहते हैं वे प्रारम्भ में रुढ़ि नहीं थीं बल्कि श्रेष्ठ परम्परा थीं लेकिन देश, काल और परिस्थिति के अनुसार अद्यतन न होने से वे आज रुढ़ि बनकर त्याज्य हो गईं क्योंकि उनमें गतिशीलता नहीं रही और वे जड़ हो गईं। कट्टरता इसी जड़ता को पोषण देती है इसीलिए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि कट्टरता जड़ता लाती है। यह जड़ता ही उस कट्टरता के खात्मे का कारण बनती है और धीरे-धीरे कालांतर में ऐसी कट्टरता एवं इस कट्टरता को पोषण देने वाली व्यवस्था इतिहास का विषय हो जाती है। भारत की यह विशेषता रही है कि वह कभी भी कट्टर नहीं रहा। भारत जब-जब कट्टर हुआ उसकी विशेषताओं को विकृतियों में बदलना पड़ा और उन विकृतियों ने भारत की भारतीयता को आशातीत रूप से घायल कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया लेकिन उसके बावजूद भारत की आत्मा में बैठी गतिशीलता ने उसे मिटने से बचा लिया। हमारे महान पूर्वजों ने निरन्तर अद्यतन की व्यवस्था तक बनाई थी। कुंभ के मेले इसका बड़ा उदाहरण हैं। हर कुंभ में राष्ट्र के सभी बड़े विचारक एकत्र होकर चर्चा करते थे एवं समाज नियमों का जमाने के अनुसार अद्यतन करते थे। यही कारण रहा कि संसार की सभी श्रेष्ठ सभ्यताएं आततायियों एवं काल के कहर के आगे इतिहास के गर्त में समा गई लेकिन भारत अपनी भारतीयता के साथ बचा रहा। लेकिन भारत की यह चेतनता, गतिशीलता एवं निरन्तर अद्यतन होने की विशेषता भी कट्टरता की विकृतियों के प्रहार जहां-जहां सहन नहीं कर पाई वहां-वहां टूटी और उसी टूटन ने भारत को लंबी गुलामी की ओर धकेला। छुआछुत, ऊंच-नीच, जातिगत श्रेष्ठता और नेष्ठता आदि के कारण हुई टूटन इसी का परिणाम है। इसीलिए कट्टरता सदैव त्याज्य ही होनी चाहिए। यदि हमें जड़ होने से बचना है, अपनी चेतनता को बचाना है, निरन्तर गतिशील रहना है, प्रगति को मंजिल मानने से बचना है, मील के पत्थरों को गंतव्य नहीं मानना है तो कट्टरता से बचना ही पड़ेगा लेकिन यहां हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि कट्टरता को छोड़ने का अर्थ एकनिष्ठता को छोड़ना नहीं है। एकनिष्ठता और कट्टरता पर्यायवाची भी नहीं हैं। लेकिन हमें यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि एकनिष्ठ होना किसके प्रति है? पूज्य तनसिंह जी ने अपनी उक्त पुस्तक के उसी प्रकरण के प्रारम्भ में ही लिखा है कि 'कोई भी साध्य अनादि और अनंत हो सकता है। वह हर देश, काल और परिस्थिति में भी उपास्य हो सकता है। किन्तु कोई भी साधना देश, काल और परिस्थिति से निरपेक्ष नहीं हो सकती। लक्ष्य कभी पुराना नहीं पड़ता, पर साधना किसी युग विशेष में अव्यवहारिक बन सकती है।' अर्थात एकनिष्ठता साधना के प्रति नहीं बल्कि लक्ष्य के लिए होनी चाहिए। पूज्य श्री ने आगे लिखा है कि 'श्रेष्ठता की ओर जाने का हर युग में मानव जति का क्रियाकलाप रहा है और रहेगा किन्तु यग परिवर्तन के साथ श्रेष्ठताओं के भी मापदंड बदलते जाते हैं। जब हम कहते हैं कि जमाने के अनुसार चलना चाहिए, उसका यह अभिप्राय नहीं कि साध्य को जमाने के अनुसार परिवर्तित कर देना, बल्कि उसका अभिप्राय है- साधना में देश काल परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन लाना।' इससे यह स्पष्ट होता है कि ध्येय के प्रति उदात्त विश्वास एकनिष्ठता है लेकिन ध्येय की धारणा के लिए किए जाने वाले क्रियाकलापों के प्रति रागात्मकता के कारण मोहवश उनसे चिपके रहना कट्टरता है। जो मार्ग मैंने तय कर लिया है या जो मार्ग प्रारम्भ में मुझे बताया गया है उनसे मैं उन बताने वालों के कहने के बावजूद भी चिपका ही रहूंगा तो यह कट्टरता है। साधना के प्रति रागात्मकता के कारण ऐसा स्वाभाविक भी है लेकिन साधना तो राग को छोड़ना ही है और ऐसे में लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य सभी राग छोड़ने ही चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं कर पाएंगे तो हमारे उन आग्रहों से बंधकर जड़ता को प्राप्त होंगे। संसार के अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। जो कट्टर थे वे मिट गए और मिटते ही जा रहे हैं लेकिन जो लोग एकनिष्ठता से अपने लक्ष्य के ध्यान में रखते हुए तदनुसार अपनी साधना को अद्यतन करते रहे वे हर झंझावत में से सुरक्षित बचकर निकल गए और यही भारत की भारतीयता के बचे रहने की संजीवनी है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी संजीवनी का स्वरूप है इसलिए यहां स्थायी केवल लक्ष्य ही है और उस लक्ष्य के अनुरूप साधना हेतु कार्यप्रणाली में निरन्तर अद्यतन होता रहता है। ऐसी प्रगतिशील कार्य प्रणाली का हिस्सा होना ही अपने आपमें गर्व की बात है।

खरी-खरी

कमजोरों की कायराना करतूतें

कमजोर व्यक्ति की एक सामान्य मानसिकता होती है कि वह अपने से बलवान की तुलना में आलोचना का सहारा लेता है। वह अपनी विशेषता को बढ़ाने की अपेक्षा प्रतिपक्षी की कमियों को उजागर कर अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो उसका यह प्रयास रहता है कि किस प्रकार सामने वाले की लकड़ी को छोटा किया जाए क्यों कि स्वयं की लकड़ी को बड़ा करने की कुव्वत तो वह रखता नहीं है। इसलिए आलोचना उसका एक मात्र सहारा होता है। आजाद भारत की राजनीति इसी आलोचना के सहारे फली-फूली है। आजादी के समय से ही जो लोग भारत की राजनीति के केन्द्र में आना चाहते थे उन्होंने भारत की जनता में उसके पूर्व शासकों की आलोचना करना प्रारम्भ किया। ढूढ-ढूंढ कर बदनाम उदाहरणों को खोजा गया और उन कतिपय उदाहरणों को आम बनाकर जनता में अपनी विशेषताओं के बल पर नहीं बल्कि अपने से पूर्व वालों की कमियां बताकर अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास किया और इसके लिए अनेक प्रकार का मिथ्या प्रचार किया गया। आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी सत्ता में आई इसीलिए उसने ऐसा अधिक किया। कालांतर में कांग्रेस की मजबूती के सामने स्वयं को बौना समझने वाले राजनीतिक दलों ने वही व्यवहार कांग्रेस के साथ करना प्रारंभ किया। प्रारंभ में गांधीजी को निशाना बनाया गया और फिर यह प्रयास नेहरू जी, इंदिरा जी आदि कांग्रेस नेताओं तक विस्तारित हो गया। पुराने गड़े-मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं, विभिन्न तस्वीरों के साथ अनर्गल टिप्पणियां की जाकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है कि पहले वाले नेष्ठ थे और आज वाले श्रेष्ठ। कांग्रेस पार्टी और उसके मातहतों ने जो भारत के राजपूत शासकों का चरित्र हनन कर अपने आपको स्थापित करने का प्रयास किया, ठीक वैसा ही उनके साथ किया जाने लगा। उस समय केवल समकालिक राजाओं के लिए ही नहीं बल्कि उनके महान पूर्वजों के बारे में भी आपत्तिजनक बातें कही गईं और इसे ही कमजोरों की कायराना करतूत कही जा सकती है। ऐसी ही करतूतें कांग्रेस के तात्कालिक नेतृत्व के विरुद्ध विगत वर्षों में भाजपा एवं उससे संबद्ध लोगों द्वारा की गई। चरित्र हनन की यह धारा यहां तक पहुंची कि नेहरू जी की उनकी बहिन के साथ तस्वीर को भी आपत्तिजनक संदेशों के साथ प्रसारित किया गया। किसी समय कांग्रेस मजबूत थी इसीलिए कमजोर विपक्ष ऐसी करतूतें करता था और आज वह विपक्ष पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में है तो कांग्रेस कमजोरी को प्राप्त हो पुनः अपनी कायराना करतूतों पर उतर आई है इसीलिए तो कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व भी एक वर्ग विशेष के लिए राष्ट्रीय नायक का सम्मान पा चुके वीर सावरकर का चरित्र हनन करने को ही राजनीति मान बैठा है। इससे भी आगे एक समाचार विगत दिनों समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ कि कांग्रेस से संबद्ध संगठन कांग्रेस सेवादल ने कार्य योजना बनाई है कि उनके लोग भाजपा से संबद्ध दिवंगत राजनेताओं श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय आदि के जीवन की कमियों को ढूंढ कर उनके बारे में जनता को बताएंगे। उन कमियों से संबद्ध साहित्य जुटाएंगे। पुराने अखबारों की कतरने इकट्ठी करेंगे अर्थात चरित्र हनन की सामग्री एकत्र करेंगे। इस प्रकार यह चरित्र हनन का सिलसिला चलता रहेगा। जिनके पास स्वयं की कोई उपलब्धि बताने को नहीं होती वे सामने वाले की उपलब्धियों को छोटा सिद्ध करने के लिए उनकी कमियां ढूंढते हैं और एक हद तक इसे सामान्य व्यवहार भी माना जा सकता है लेकिन जब यह करतूतें किसी दिवंगत नायक के प्रति होती है तो कायराना ही कही जाएंगी क्योंकि वे जवाब देने को उपलब्ध नहीं है। संसार में कौन ऐसा है जिसमें कमियां नहीं ढूंढी जा सकती, सकारात्मक लोगों की नजरें उधर न जाकर उन श्रेष्ठताओं को ढूंढती है, जिनसे प्रेरणा मिलती है लेकिन नकारात्मक लोगों की नजरें तो नेष्ठताओं को ढूंढा करती हैं। ऐसे लोग यदि किसी बड़े पद को प्राप्त कर लेते हैं तो भी वे आसमान में ऊंचाई पर उड़ते गिद्दों के समान होते हैं जिनकी नजरें सदैव मरे जानवरों पर होती है। इसी प्रकार आजकल बड़े-बड़े लोग गुजरे हुए इतिहास की चीड़-फाड़ कर अपने आपको बड़ा सिद्ध करने में लगे हैं क्यों कि कुछ बड़ा करने की अपनी क्षमताओं पर उन्हें विश्वास नहीं है। इसीलिए कभी गांधीजी तो कभी नेहरू जी, कभी वीर सावरकर तो कभी गोलवलकर जी, कभी श्यामप्रसाद जी तो कभी इंदिरा जी के चरित्र हनन को ही आज के राजनेता पुरुषार्थ सिद्ध करने को उतावले हैं। अब चरित्र हनन करने को इनके अपने नायक उपलब्ध हो गए हैं इसीलिए आजकल हमारे पूर्वजों से इनकी नजरें हटी हुई हैं लेकिन हम तो सावधानी बरतें। हमारी परम्परा कायरता की नहीं रही है, हमारे यहां कायरता गाली मानी जाती है, अतः हम इस प्रकार की कायराना करतूतों का जाने अनजाने हिस्सा बनने की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठताओं को उभारें एवं अपनी लकड़ी को बड़ा बनाने का प्रयास करें।

बालिका छात्रावास बाड़मेर का भूमि पूजन

बाड़मेर में बालिका छात्रावास के निर्माण हेतु किशोरसिंह कानोड़ ने एक करोड़ रुपए देने की घोषणा एक सामाजिक कार्यक्रम में विगत दिनों की थी। अपने बाड़मेर प्रवास के दौरान माननीय संघ प्रमुख श्री ने उनके आग्रह पर बाड़मेर के सहयोगियों सहित इस हेतु भूमि का चयन किया एवं 17 जनवरी को इस भूमि पूजन कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि इतिहास में नाम उसी कौम का होता है जो ज्ञान, ध्यान, भक्ति व शौर्य में आदर्श स्थापित करे। हम केवल पुरुषों तक ही सीमित रह जाएंगे तो इतिहास भी अधूरा रह जाएगा। राजपूत जाति का उज्वल इतिहास इसीलिए है कि पुरुषों से मातृ शक्ति किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रही। आधुनिक समय में हमारी मातृ शक्ति के पास बाकि सब तो है पर किताबी शिक्षा की कमी होने के कारण वो अपनी आने वाली पीढ़ी को ज्ञान, ध्यान, भक्ति, वीरता को नहीं दे पा रही है। किताबी ज्ञान के लिए स्कूली शिक्षा व उच्च अध्ययन दोनों जरूरी है। केवल नौकरी के लिए ही विद्यालय जाना है इस भ्रांति ने बालिका शिक्षा के क्षेत्र में हमें बहुत पीछे धकेल दिया। विशेषकर बाड़मेर-जैसलमेर को क्योंकि हमें बेटियों को नौकरी तो करवानी नहीं तो पढ़ कर क्या करें? स्कूली शिक्षा से नौकरी मुश्किल से एक या दो प्रतिशत को ही हासिल होती है परन्तु व्यक्तित्व निर्माण में यह एक महत्वपूर्ण अंग है इसीलिए किताबी शिक्षा भी अनिवार्य है। यह शिक्षा प्राप्त होती है विद्यालयों से, महाविद्यालयों से, विश्वविद्यालयों से और ये सब जगह उपलब्ध नहीं हैं। बड़े कस्बे व शहरों में सब हैं तो बालिकाएं रहे कहां यह अति महत्वपूर्ण समस्या है इसके लिए छात्रावास चाहिए। छात्रावास निर्माण से उसका संचालन बहुत कठिन कार्य है इसीलिए बाड़मेर के लोग जो इस क्षेत्र से जुड़े हैं उन पर बहुत बड़ा दायित्व है इसके संचालन का, कृपया पूर्ण सावधानी पूर्वक संचालन करें क्योंकि प्रतिष्ठित समाज का उज्वल चरित्र आपके हाथ है, इसको कभी ना भूलें। बाड़मेर में बालिका छात्रावास के निर्माण हेतु भूमि पूजन के अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हमने दो प्लॉट में सीकर में हॉस्टल प्रारम्भ किया, फिर वसुंधरा जी की सरकार ने जमीन आवंटित की, वहां छात्रावास व विद्यालय दोनों चला रहे हैं परन्तु कितनी विकट परिस्थिति है ये आप सब भली भांति परिचित हैं। अतः निर्माण से ज्यादा संचालन में सावधानी बरतें ईश्वर हम सब का कल्याण करेगा। किशोरसिंह जी का पत्र प्राप्त हुआ कि बाड़मेर जिला मुख्यालय पर बालिका छात्रावास हेतु एक करोड़ रुपए देना चाहता हूं, अति प्रसन्नता हुई। ऐसे महत्वपूर्ण कार्य का पत्र द्वारा प्रत्युत्तर देकर देरी करने के बजाय फोन पर बात की। उपर्युक्त स्थान का चयन कर छात्रावास बनाने की बात की कि यदि यह राशि जमीन खरीदने पर खर्च कर देंगे तो भवन निर्माण अधूरा रह जाएगा इसलिए उपलब्ध जमीन पर निर्माण किया जाना उचित रहेगा। बाड़मेर में कुछ स्थानों पर देखा भी परन्तु सहमति नहीं बन पाई। बाड़मेर रावल साब, माड़साब कमलसिंह आदि को यह स्थान बताया गया। दो रोज पहले जब मैं बाड़मेर था तब मैंने भी देखा, लोकेशन, आवागमन के साधन, शैक्षणिक संस्थानों से दूरी आदि विषयों में उपयुक्त लगा। आज भूमि पूजन व नींव का मुहुर्त कर दिया है अब यह निर्माण कार्य रुकना नहीं चाहिए, चालू रखे, बंद नहीं करें। किसी भी कार्य को बंद करने से उसमें विकार, खामियां आ जाती हैं अतः सुचारू रखें। ईश्वर की कृपा हम सब पर रहेगी ऐसा मेरा मानना है। बलवंतसिंह परिवार जिसने यह धन व्यय करने का निर्णय लिया है, उनका धन परम पिता गुणित कर वृद्धि करें। इस अवसर पर मलसिंह उंडखा द्वारा छात्रावास व समिति के बारे में जानकारी दी। कमलसिंह चूली ने शिक्षा का महात्म्य बताया। वहीं हीरसिंह रणधा ने सबका आभार व्यक्त किया। किशोरसिंह कानोड़ ने सबका स्वागत किया, राजेन्द्रसिंह भियाड़ ने संचालन किया।

जालोर, सिरोही, पाली टीम की समीक्षा बैठक

जालोर व पाली में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन का कार्य विगत मार्च माह में प्रारम्भ हुआ एवं सितम्बर माह में पाली में बैठक कर काम प्रारम्भ किया गया। तीनों ही जिलों में सहयोगियों की टीमों का गठन किया गया। 19 जनवरी को अब तक हुए कार्य की समीक्षा एवं आगामी 6 माह की कार्य योजना बनाने के लिए सुमेरपुर के जवाई बांध रोड स्थित आई.टी.आई. कॉलेज में तीनों टीमों के सहयोगियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में आगामी 6 माह में छोटी-छोटी बैठकें कर फाउण्डेशन के संदेश को गांव-गांव, ढाणी-ढाणी तक पहुंचाने, स्थानीय स्तर पर कर्मचारियों की बैठक कर उनका फाउण्डेशन के माध्यम से समाज के लिए उपयोग लेने, सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ लेने के लिए ई-मित्र संचालकों की बैठक करने एवं हर पंचायत में हमारे समाज का एक ई-मित्र संचालक तैयार करने, ई.डब्ल्यू.एस. विषय पर केन्द्र सरकार के प्रतिनिधियों तक लगातार अपनी मांग पहुंचाना जारी रखने तथा अन्य समाजों के साथ सौहार्द्र हेतु बैठक का आयोजन करने का लक्ष्य तय किया गया। बैठक के अंत में सभी सहयोगियों ने सुमेरपुर के साथियों द्वारा आयोजित स्नेहभोज का आनन्द लिया।

सुमेरपुर में तहसील स्तरीय बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की सुमेरपुर एवं शिवगंज तहसील की बैठक 19 जनवरी को सुमेरपुर स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर में संपन्न हुई। बैठक में उपस्थित समाज बंधुओं से फाउण्डेशन के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए बताया गया कि संघ अपने-आप में पूर्ण साधना मार्ग है जो जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। संघ अपने इसी साधना मार्ग में अनेक प्रकार के प्रयोग कर समाज जीवन में सांघिक उद्देश्य के लिए अनुकूलता पैदा करने का प्रयास करता है। ऐसा ही एक प्रयोग श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन है जिसके तहत समाज की सकारात्मक युवा शक्ति को संयोजित कर समाज में वर्तमान व्यवस्था, अन्य समाजों एवं संविधान के प्रति फैली नकारात्मकता को दूर करने के लिए अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं। बैठक में सुमेरपुर में पदस्थापित ब्लाक शिक्षा अधिकारी परबतसिंह खिंदारागांव सहित अनेक युवा व्यवसायी समाजबंधु भी उपस्थित थे।

पटवारी व कांस्टेबल परीक्षा हेतु टेस्ट सीरीज

राज्य सरकार द्वारा पटवारी एवं कांस्टेबल की भर्ती के लिए विज्ञप्ति निकाली है और हमारे समाज के अनेक युवा इन भर्तियों के लिए तैयारी कर रहे हैं। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन से जुड़े समाज बंधु ऐसे युवाओं को अपनी तैयारी का मूल्यांकन करने के लिए टेस्ट सीरीज का आयोजन कर रहे हैं। 12 जनवरी को फाउंडेशन के द्वितीय स्थापना दिवस के अवसर पर बाड़मेर से इसकी शुरुआत की गई। बाड़मेर की टीम ने इसके लिए पूरे सिलेबस को आठ भागों में बांट कर आठ टेस्ट आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया। 19 जनवरी से नागौर जिले के सहयोगी

भी इसमें सहयोगी बने एवं नागौर में भी आठ स्थानों पर टेस्ट का आयोजन किया गया। 26 जनवरी को बीकानेर जिले में भी यह कार्य प्रारंभ किया जा चुका है। धीरे-धीरे मांग के अनुरूप और स्थानों पर भी टेस्ट आयोजित किए जा रहे हैं। फाउंडेशन के अलावा अन्य सहयोगी भी विभिन्न स्थानों पर इस तरह का प्रयास कर रहे हैं। सभी का सामाजिक भाव वंदनीय है।

कृतज्ञ समाज ने मनाई संघ के प्रणेता की जयंती

(पृष्ठ एक से लगातार)

कार्यक्रम चैन सिंह साथिन के संचालन में सम्पन्न हुआ। जसवंत होस्टल जोधपुर में भी जयंती मनाई गई। शेरगढ़ बालेसर प्रांत के मंगल बाल विद्या मंदिर में भी जयंती मनाई गई। इसी प्रकार बालोतरा संभाग में विभिन्न स्थानों पर जयंती मनाई गई। पादरू में श्री जैतमाल राजपूत छात्रावास में जयंती समारोह पूर्वक मनायी गयी जिसमें संभाग प्रमुख मुलसिंह काठाड़ी के अतिरिक्त प्रेम सिंह पादरू, भोपाल सिंह पादरू, मंगल सिंह गोठडा, पवन सिंह कोहड़ा, तन सिंह धारणा,अखे सिंह धारणा, शैतान सिंह मिठोड़ा आदि तथा महिला शक्ति में रिंकू कंवर पादरू, चंद्रिका कंवर काठाड़ी आदि सहित बड़ी संख्या में समाजबन्धु उपस्थित रहे। इसी प्रकार कुण्डल के स्थानीय निजी शिक्षण संस्थान सरोज बाल निकेतन में पूज्य तन सिंह जी की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा द्वारा लिखित आलेख 'मां के मुख से' का पठन किया गया। विवेकानंद स्कूल बालोतरा, मेवानगर, श्री पृथ्वीराज शाखा सिणेर में भी जयंती मनाई गई। कल्याणपुर की दईपड़ा खिंचियान बाल शाखा में पूज्य तनसिंह जी जयंती समारोह कल्याणपुर प्रान्त प्रमुख वीरम सिंह थोब के संचालन में मनाया गया। कार्यक्रम में मंडल प्रमुख हुक्म सिंह थोब, शिक्षाविद भंवर सिंह, सोहन सिंह, चन्दन सिंह, भगवत सिंह सहित ग्रामीण एवं शाखा के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। इसी प्रकार वीर दुगार्दास हॉस्टल बालोतरा में वरिष्ठ स्वयंसेवक चन्दन सिंह चान्देसरा की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। चादेंसरा गांव स्थित नागणेशी माता मंदिर में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

बाड़मेर संभाग में शिव प्रान्त के चोचरा गांव में स्थित पाबूजी के प्राचीन मंदिर में भी हर्षोल्लास के साथ पूज्यश्री की जयंती मनाई गई। प्रान्त प्रमुख राजेन्द्र सिंह भियाड़ के संचालन में सम्पन्न इस कार्यक्रम में स्वयंसेवक राजेन्द्रसिंह भियाड़ प्रथम ने पूज्य श्री के जीवन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में चोचरा के साथ साथ आसपास के गांवों के सैकड़ों स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान चोचरा गांव के सरकारी सेवा, चयनित युवाओं का सम्मान भी किया गया।

बीकानेर

डीडवाना, नागौर

बाड़मेर शहर में स्टेशन रोड स्थित श्री मल्लीनाथ छात्रावास में वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह चुली के सानिध्य में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें बाड़मेर शहर प्रान्त की सभी शाखाओं के स्वयंसेवक व शहर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। बाड़मेर के सिवाना में कल्ला रायमलोत राजपूत बोर्डिंग में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक हनुवंत सिंह मवड़ी, प्रेमसिंह राणीगांव सहित अनेक स्वयंसेवक बंधु उपस्थित रहे। बाड़मेर में चौहटन स्थित भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। तनसिंह जनकल्याण संस्थान बाड़मेर के तत्वावधान में आयोजित यह कार्यक्रम प्रान्त प्रमुख उदय सिंह देदूसर उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। जैसलमेर संभाग के चांधन प्रान्त में चांधन स्थित राजपूत छात्रावास में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख तारेंद्र सिंह झिंझिनियाली, मंडल प्रमुख अमर सिंह जेठा, दान सिंह चांधन आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान नारायण सिंह जी रेड़ा द्वारा लिखित 'माँ के मुख से' आलेख का वाचन किया गया। चांधन प्रान्त के ही देवीकोट मंडल में देवीकोट स्थित श्री मरूधरा आदर्श छात्रावास परिसर में भी जयंती मनाई गई। इस दौरान रूपादे शिक्षण संस्थान के संचालक उगम सिंह लूणा, चंदन सिंह मूलाना, वीरेन्द्र सिंह राजमथाई सहित रावल मल्लीनाथ छात्रावास, मालण बाई छात्रावास, आदर्श छात्रावास, मरूधरा छात्रावास के सैंकड़ों छात्र उपस्थित थे। पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्मस्थान बेरसियाला में भी जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें ग्रामवासियों ने पूज्यश्री के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट की। जैसलमेर में भोजदेव शाखा, तेजमालता तथा जोगीदास का गांव में भी जयंती मनाई गई। पोकरण के दयाल राजपूत छात्रावास में संभाग प्रमुख गणपतसिंह अवाय की उपस्थिति में जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में प्रांतप्रमुख नरपतसिंह राजगढ़, पूर्व विधायक शैतान सिंह सहित सैंकड़ों समाज बंधु उपस्थित रहे। पोकरण के भैंसड़ा तथा फलसुंड में भी कार्यक्रम आयोजित हुए।

जालोर प्रान्त के अंतर्गत आहोर में शक्ति सराय में जयंती समारोह का आयोजन हुआ जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में स्थानीय शहरवासी तथा सिंधलावाटी क्षेत्र के समाजबंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। जालोर संभाग के भीनमाल में स्थानीय गोपाल राजपूत छात्रावास में प्रांतप्रमुख नाहरसिंह जाखडी की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें रेवन्त सिंह राउता, भेरुपालसिंह दासपा, चन्दनसिंह कावतरा, जनकसिंह जेरन, दलपतसिंह पुनासा आदि उपस्थित रहे। जालोर संभाग के अंतर्गत ही श्री राव बल्लू जी राजपूत छात्रावास सांचौर में भी पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को प्रेम सिंह अचलपुर, खंगार सिंह कारोला, देवेंद्र सिंह विरोल ने संबोधित किया तथा दुर्ग सिंह सुरावा ने कार्यक्रम का संचालन किया। पाली प्रान्त में शहर स्थित वीर दुगार्दास राठौड़ छात्रावास की शाखा में भी जयंती कार्यक्रम रखा गया। जयंती के उपलक्ष में स्वयंसेवकों द्वारा मारवाड़ जंक्शन, चार्वाडिया, राणावास आदि स्थानों पर विचार क्रांति अभियान के अंतर्गत संघशक्ति व पथप्रेरक की सदस्यता हेतु अभियान चलाया गया। गुडांगरी तथा बासनी शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। नागौर प्रांत के खींवसर तहसील के साठीका मे पूज्य श्री की जयंती बनाई गई। लक्ष्य पब्लिक शिक्षण संस्थान माध्यमिक विद्यालय साठीका कल्ला में आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाध्यापक लाल सिंह तापू , पुर्वसरपंच जगमाल सिंह, गोमन्द सिंह और राम सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। नागौर में डीडवाना व लाडनूं मंडल का संयुक्त कार्यक्रम वीरवार दुगार्दास राठौड़ सभा भवन, डीडवाना में प्रांतप्रमुख विक्रमसिंह ढींगसरी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जैसलमेर

तनायन, जोधपुर

खड़सलिया, गुजरात

भालीखाल, बाड़मेर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

कृतज्ञ समाज ने मनाई...

(पृष्ठ छह से लगातार)

मेड़ता के श्री चारभुजा राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई। नागौर संभाग में ही कुचामन स्थित संघ कार्यालय आयुवान निकेतन में वरिष्ठ स्वयंसेवक छोटूसिंह जाखली तथा भगवत सिंह सिंघाना की उपस्थिति में जयन्ती मनाई गई। नागौर स्थित राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई। नागौर के छापड़ा गांव में तथा बिदासर मण्डल में केरियर पोईन्ट स्कूल बिदासर में भी जयन्ती मनाई गई। उदयपुर में संस्थापक श्री की जयंती का आयोजन महाराणा साँगा शाखा, बी एन में हुआ, जिसमें संभागप्रमुख भंवरसिंह बेमला उपस्थित रहे। मेवाड़-मालवा सम्भाग के अंतर्गत भीलवाड़ा स्थित प्रताप युवा शक्ति के कार्यालय में जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा उपस्थित रहे। बीकानेर के नोखा में स्थानीय श्री करणी राजपूत छात्रावास में पूज्यश्री की जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम को करणीसिंह भेलू, रामसिंह चरकडा, प्रतापसिंह पीपासर ने संबोधित किया। बीकानेर में ही श्री करणी विद्या मंदिर किरतासर में भी जयंती मनाई गई जिसमें नरेन्द्रसिंह तोगावास तथा सवाईसिंह भुरासर ने उपस्थित संजबन्धुओं को तनसिंह जी के व्यक्तित्व व कृतित्व से परिचित कराया। बीकानेर संभाग के छतरगढ़ प्रान्त के मोतीगढ़ में सरस्वती पब्लिक स्कूल में पूज्य श्री की 96वीं जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें प्रान्त प्रमुख शक्ति सिंह आशापुरा उपस्थित रहे। बीकानेर में विजय भवन शाखा में संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर के नेतृत्व में जयंती मनाई गई। चुरू प्रान्त के रतनगढ़ क्षेत्र के लुणासर गांव में भी जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेरसिंह गुड़ा, प्रांतप्रमुख राजेन्द्र सिंह आलसर, किशन सिंह गौरीसर, महेंद्र सिंह परसनेऊ, मोहन सिंह फ्रांसा, विक्रमसिंह पाबूसर सहित ग्रामवासी उपस्थित रहे। सीकर के महरोली में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। करणी बाल स्कूल, इंद्रा कॉलोनी पार्क जैसलमेर में पूज्य श्री की जयंती वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया की उपस्थिति में मनाई गई। कार्यक्रम में कॉलोनी की शाखाओं के स्वयंसेवकों सहित सामाजिक भाव रखने वाले बन्धु उपस्थित रहे।

इसी प्रकार गुजरात में बनासकांठा प्रांत में विभिन्न स्थानों पर पूज्यश्री की जयन्ती उत्साहपूर्वक मनाई गई। प्रान्त के थराद मंडल की करबून, वलादर तथा नारोली शाखाओं में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुए। वड़गाम मंडल में झांझर रेजीडेंसी में शाम 4 से 6 बजे तक जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसी प्रकार धानेरा मंडल में राजपूत बोर्डिंग में समारोह आयोजित हुआ जिसमें सैकड़ों समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम को प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर के अतिरिक्त महन्त राम भारती महाराज (नकलंग धाम, लाछीवाड), वाव राणा गजेन्द्रसिंह, मफतसिंह फोरणा, अर्जुनसिंह थराद, गुमानसिंह माडका, ईश्वरसिंह जी आरखी, डूंगरसिंह चारडा, हीरसिंह जाड़ी ने संबोधित किया। पूज्य श्री तनसिंह जी जयंती पर गुजरात के सूरत शहर में रक्तदान शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 118 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। गुजरात में महेसाना प्रांत के पाटन मंडल का जयंती कार्यक्रम जखाना गांव में आयोजित किया गया जिसमें धर्मेंद्रसिंह मोटी चंदुर, शक्तिसिंह जाखना और बलवंत सिंह उपस्थित रहे। इसी प्रकार पडुस्मा गांव में शाखा स्तर पर कार्यक्रम रखा गया। इंद्रसिंह पडुस्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया। अहमदाबाद ग्राम्य प्रान्त के अंतर्गत कानेटी गांव की दरबारवाड़ी में वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवानसिंह कानेटी, महावीरसिंह हरदासकाबास तथा जागृतिबा हरदासकाबास की उपस्थित में जयंती मनाई गई। गोहिलवाड संभाग में खड़सलिया में केन्द्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची की उपस्थिति में जंयती मनाई गई। राजपूत छात्रावास वल्लभीपुर में भी कार्यक्रम रखा गया। गुजरात के भाल प्रान्त में धंधुका स्थित राजपूत छात्रावास में भी जयंती कार्यक्रम रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीणसिंह धोलेरा उपस्थित रहे। मेहसाणा की नंदाली शाखा में तथा गांधीनगर जिले के पीथापुर गांव में भी जयन्ती मनाई गई। गुजरात के सुरेंद्रनगर स्थित संघ कार्यालय शक्तिधाम में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सानिध्य में जयन्ती मनाई गई। साणंद की चेखला तथा मोडसर शाखाओं में भी जयन्ती मनाई गई। महाराष्ट्र में मुम्बई की तनेराज शाखा, नारायण शाखा तथा वीर दुगार्दास शाखा में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक उपस्थित रहे। पुणे में भी कार्यक्रम रखा गया। उत्तरप्रदेश के मोरना में भी जयन्ती मनाई गई। मध्यप्रदेश के सुवासरा में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। सिरोही प्रांत का कार्यक्रम सिवणा में आयोजित हुआ। पोकरण संभाग के राजमथाई में भी कार्यक्रमा रखा गया।

धानेरा, गुजरात

चौहटन, बाड़मेर

चितौड़गढ़

बेलवा, जोधपुर

(पृष्ठ एक का शेष)

चल पड़े...

आप सबको सूचना होने पर आप यहां आए तब मैं यह मानता हूं कि निश्चित रूप से आप में संघ का प्रवेश हुआ है। तनसिंह जी ने आपके भीतर दस्तक दी है लेकिन समाज की स्थित उस बालक जैसी है जो अपनी नाक पर बैठी मक्खी उड़ाने के लिए भी अपनी मां को कहता है और मां द्वारा स्वयं उड़ाने के लिए कहने पर करता है कि एक नहीं दो बैठी है। पूरे समाज की यही हालात है, भगवान ने कृपा पूर्वक सुख एवं शांति के लिए मनुष्य जीवन दिया और हम इसका उपयोग इस हेतु के लिए नहीं करते तो जीवन व्यर्थ जा रहा है। मैं आपको जो कर रहे हैं उसे छोड़ने के लिए नहीं कह रहा लेकिन जागृत कर रहा हूं कि यह जीवन का लक्ष्य नहीं है। पूज्य तनसिंह जी फक्कड़ नहीं थे, पूज्य आयुवानसिंह जी व नारायणसिंह जी भी फक्कड़ नहीं थे लेकिन अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य याद था।

संघ प्रमुख श्री ने कहा कि अनेक लोग संघ के साथ चलते हैं लेकिन चलते-चलते शंकाएं पाल लेते हैं, कुंठित हो जाते है और मार्ग छोड़ देते हैं। लेकिन जरा सोचें कि ऐसे लोग नुकसान किसका कर रहे है। वे स्वयं ही मार्ग से भटक कर स्वयं की हानि करते हैं। पूज्य तनसिंह जी जागृत व्यक्ति थे, उन्होंने जागरण का शंख बजाया। जागरण का शंख बजाने वाले महान लोग होते हैं और ऐसे महान लोगों को कृतज्ञ समाज याद करता है इसलिए आज हम उनकी स्मृति में कार्यक्रम कर रहे हैं। लेकिन हमारा यह स्मरण उनसे प्रेरणा लेने में बदले तब ही सार्थकता है। ऐसा जागृति के बिना संभव नहीं है। जागने पर व्यक्ति उठता है, उठता है तो चलता है, लक्ष्य के समीप जाता है, लक्ष्य की बात सुनता है, देखता है, समझता है, मनन करता है, बोध करता है। यह सब जागृत लोगों से ही संभव है और संघ ऐसी ही जागृति की बात करता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि संपूर्ण संसार में भारत श्रेष्ठ राष्ट्र है और भारत में राजपूत सर्वश्रेष्ठ जाति है। लोग जाति मिटाने की बात करते है लेकिन मैं जाति भेद मिटाने की बात करता हूं जाति को नहीं। जाति हमारी पहचान है, हमारी पूर्वज परम्परा है। दूसरों को रक्षार्थ अपने जीवन की परवार न करने वाले पूर्वजों की संतान होने की पहाचन हमें इसी जाति से मिली है। हमारे पूर्वज ऐसे थे, हम नहीं लेकिन हमें उस तरफ बढ़ना है इसीलिए मैं मानता हूं कि श्री क्षत्रिय युवक संघ श्रेष्ठतम मार्ग है। जो मार्ग अपने लिए नहीं बल्कि संसार के लिए जीना सिखाता है जिसका नारा जीयो और जीने दो नहीं बल्कि स्वयं मरकर भी अन्यों को जीवन प्रदान करना है। उससे श्रेष्ठ संसार में क्या हो सकता है इसलिए पूज्य तनसिंह जी का संदेश है कि संघ हमारे लिए आत्मंतिक मुक्ति का मार्ग है, संघ अमर होने का मार्ग है लेकिन इसके लिए बिना रुके निरन्तर चलना आवश्यक है। इसीलिए चरिवैति-चरिवैति।

शिविर सूचना

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन से जुड़े सहयोगियों के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 21 फवरी से 23 फरवरी तक मोरदिया कृषि फार्म, हाथोज (जयपुर) में आयोजित किया जा रहा है। यह शिविर 21 फरवरी को प्रातः वंदना के साथ ही प्रारम्भ होगा अतः 20 फरवरी की रात तक शिविर स्थल तक पहुंचना है। भोजन शुल्क प्रति शिविरार्थी 500 रुपए रखी गई है।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय

कुलदीप सिंह सिंघाना (जिला- नागौर)

सुपुत्र श्री नीर सिंह सिंघाना

(संभाग प्रमुख महाराष्ट्र)

का देश की प्रतिष्ठित सेवा चार्टेड अकाउंटेंट के रूप में चयनित होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

गोपालसिंह सुरावा (जालोर)	रणजीतसिंह आलासन (जालोर)	पाबूदानसिंह दौलतपुरा (नागौर)	देवीसिंह झलोड़ा (जैसलमेर)
परबतसिंह आकोरापादर (जालोर)	श्रवणसिंह सिवाणा (बाड़मेर)	नरेंद्रसिंह देलदर (सिरोही)	विक्रमसिंह केशवणा (जालोर)
शम्भूसिंह धीरा (बाड़मेर)	नाथूसिंह काठाड़ी (बाड़मेर)	शम्भूसिंह वालियाना (बाड़मेर)	महावीरसिंह काम्बा (जालोर)
वागसिंह लोहिड़ी (बाड़मेर)	हुकमसिंह पीपळून (बाड़मेर)	विक्रमसिंह लीलसर (बाड़मेर)	शिंभूसिंह आसरवा (नागौर)
छैलसिंह धीरा (बाड़मेर)	श्रवणसिंह दौलतपुरा (नागौर)	प्रेमसिंह दुधवा (बाड़मेर)	ईश्वरसिंह जागसा (बाड़मेर)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org